The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

हिन्दी कहानी के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका का योगदान

रोहित कुमार

शोधछात्र, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22097740

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 18-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

हिन्दी नवजागरण, साहित्यिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना, नैतिकता, आदर्शवाद, भाषा-परिष्कार, खड़ी बोली हिन्दी

ABSTRACT

हिन्दी कहानी की विकास परम्परा में 'सरस्वती' पत्रिका को आधारशिला के रूप में प्रसिद्धि मिलती है। इस पत्रिका ने कहानी के विकास को एक मंच दिया, इसके साथ ही नए लेखकों को अवसर प्रदान किया। इसने भाषा का परिष्कार करके उसे शुद्ध भाषा के रूप में स्थापित किया और साथ ही सामाजिक चेतना को बढ़ावा देते हुए साहित्य में अपना विशिष्ट योगदान देकर अपने आपको साहित्यिक पत्रिका के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'सरस्वती' पत्रिका का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसका प्रकाशन सन् 1900 ई0 में इलाहाबाद के इण्डियन प्रेस से प्रारम्भ हुआ था। सन् 1903 ई0 से महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन कार्य में यह पत्रिका हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास का प्रमुख माध्यम बन गई। हिन्दी कहानी के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका न केवल नई कहानियों को प्रकाशित किया बल्कि कहानी को एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इण्डियन प्रेस, प्रयागराज से प्रकाशित होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक के रूप में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की साहित्य-साधना अपनी बहुमुखी शक्ति के साथ प्रकाश में आती है। 'सरस्वती' पत्रिका एक ऐसी पत्रिका है जो अपने प्रकाशन के अन्तर्गत सामान्य रचनाओं को प्रकाश में लाने का कार्य नहीं करती थी, यह पत्रिका भारतीयता, देश-प्रेम एवं सामाजिक चेतना की भावना से ओत-प्रोत कवियों एवं साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण कृतियों को प्रकाशित करके एक आदर्श शिक्षण संस्था का कार्य कर रही थी। हिन्दी कहानी

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के शुरूआती दौर में अंकुरित हो रही थी परन्तु इसका पल्लवन एवं पूर्ण विकास 1900 ई0 के बाद इस पत्रिका के माध्यम से हुआ। हिन्दी कहानी साहित्य के क्षेत्र में कवियों तथा लेखकों के लिए प्रेरणास्रोत तथा हिन्दी खड़ी बोली की भाव-सम्पदा उसके भाषा वैभव को एक नया रूप दिया।

प्रस्तावना-

इस पत्रिका के माध्यम से साहित्य को एक नई चेतना मिली साथ ही खड़ी बोली हिन्दी की भाषा-सम्पदा तथा उसके भाषा वैभव को एक आदर्श रूप मिला। भारतेन्दु युग में गद्य शैली पर आधारित रचनाओं की प्रचुरता तो टूटी-फूटी एवं अस्त-व्यस्त ब्रज मिश्रित खड़ी बोली में होने लगी थी परन्तु काव्य रचना ब्रज भाषा में ही हो रही थी। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने तथा उसे परिष्कृत, सुसंस्कृत, व्याकरण सम्मत एवं सशक्त रूप प्रदान करने का गुरुत्वर दायित्व अपने आप पर डाला। "पथ-प्रदर्शक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दी गद्य के 'आधार-स्तम्भ' थे, जिन्होंने 1903 ई0 से लेकर 1920 ई0 तक अपने जमाने की मशहूर पत्रिका 'सरस्वती' का सम्पादन का भार वहन किया।"[1]

प्रारम्भ में इस पत्रिका के लिए सामग्री का बहुत अभाव था। जो कुछ सामग्री उपलब्ध भी हो रही थी, वह भाषा एवं व्याकरणगत त्रुटियों से परिपूर्ण तथा कमियाँ लिए होती थी। इस पत्रिका के लिए आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी दिन-रात अपनी लेखनी चलाते थे तथा दूसरी तरफ कवियों एवं लेखकों की रचनाओं का वस्तु एवं भाषागत संशोधन करते थे। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जैसे कर्मनिष्ठ साहित्य सेवी को पाकर 'सरस्वती' पत्रिका का रचनासार हिन्दी कहानी का विकास में हिन्दी भाषा अपने भाषा-परिष्कार का भाव-सौन्दर्य तथा भाषा वैभव में धन्य हो उठी थी। हिन्दी कहानी के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका की महती भूमिका के साथ ही कहानी विधा की जन्मदात्री पत्रिका के रूप में अपना स्थान बना लिया था। "उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्ष में 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशनारम्भ (1900) के साथ उसके सम्पादकों ने लघु आकारी कथाओं के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस की जिससे यह पत्रिका की आंतरिक आवश्यकता भी हो सकती थी और अंग्रेजी में लोकप्रिय हो चुकी 'शार्ट स्टोरी' का प्रभाव भी।"[2]

हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास में 'सरस्वती' पत्रिका खड़ी बोली लोगों को प्रोत्साहित करने लगी और प्रचुर मात्रा में खड़ी बोली के साहित्य का सृजन कार्य होने लगा। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ इसमें प्रकाशित होने लगीं। सन् 1899 ई0 को 'नागरी प्रचारिणी सभा' ने 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक

मण्डल का नाम घोषित किया था, जिसमें पाँच कवियों के नाम थे जो इस प्रकार हैं- कार्तिक प्रसाद खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी, जगन्नाथ दास रत्नाकर, राधाकृष्ण दास, श्याम सुन्दर दास आदि। सम्पादक मण्डल में इन कवियों की महती भूमिका दिखाई पड़ती है।

इसके बाद 1900 ई0 से सन् 1902 ई0 तक बाबू श्यामसुन्दर दास ने इस पत्र के सम्पादक के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। 'सरस्वती' पत्रिका का प्रथम अंक 1 जनवरी, 1900 ई0 को निकला था। इसी प्रथम अंक में किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' कहानी प्रकाशित हुई थी तथा इस कहानी को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और अन्य विद्वानों ने इसे कहानी कहा जबकि लेखक किशोरीलाल गोस्वामी ने स्वयं इसे 'आख्यायिका' कहा था।

"सर्वप्रथम श्याम सुन्दर दास ने अंग्रेजी की 'शॉर्ट स्टोरी' विधा के लिए हिन्दी में 'आख्यायिका' पद का प्रयोग आरम्भ किया।"[3] जिस प्रकार से कहानी का प्राचीन नाम संस्कृत में 'गल्प' या 'आख्यायिका' मिलता है लेकिन आधुनिक युग में कहानी के नाम से जाना जाता है। हिन्दी की आधुनिकता का जन्म वर्तमान युग की आवश्यकताओं के कारण पल्लवित हुआ है। अगर हम वर्तमान रूप में देखें तो यह विधा अंग्रेजी साहित्य से होकर हिन्दी में आकर अपना स्थान मुख्य विधा के रूप में हासिल करती है।

अध्ययन का उद्देश्य-

1. हिन्दी कहानी के विकास का अध्ययन करना।
2. हिन्दी कहानी के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका की भूमिका का मूल्यांकन करना।
3. महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में 'सरस्वती' पत्रिका के साहित्यिक योगदान को समझना।
4. हिन्दी कहानी के सामाजिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय चेतना से जुड़े विकास का अध्ययन करना।
5. 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित प्रमुख कहानीकारों एवं उनकी कहानियों का अध्ययन करना।

हिन्दी का विकास : 'सरस्वती' पत्रिका-

हिन्दी कहानी के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका का महत्त्वपूर्ण योगदान है। 'सरस्वती' पत्रिका के साथ ही कहानी जन्म ले रही थी, जिसका समय 1900 ई0 के आस-पास दिखाई पड़ता है। 'सरस्वती' पत्रिका के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है- "द्वितीय उत्थान (अपने समय) की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली पत्रिका कहा था।"

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा अब तक लगभग सवा सौ वर्ष की यात्रा पूरी कर चुकी है, जिसमें बहुत से परिवर्तन होते रहे हैं, जिसकी भूमिका 'सरस्वती' पत्रिका के द्वारा बनाई गई थी। "हिन्दी कहानी के आविर्भाव की दृष्टि से सन् 1900 में प्रकाशित 'सरस्वती' की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है।"[4]

'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन कार्य काशी से होता था लेकिन इसका प्रकाशन 'इण्डियन प्रेस', इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) से होता था। इस पत्रिका के सम्पादक के रूप में महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 1903 ई0 से 1920 ई0 तक कार्य किया। इनके सम्पादन काल के दौर में छायावादी प्रवृत्तियों का समावेश पूर्णतः निषिद्ध कर दिया था। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन काल में हिन्दी कहानी के विकास के साथ-साथ हिन्दी कविता, भाषा, निबन्ध, आलोचना एवं अन्य क्षेत्रों में 'सरस्वती' पत्रिका का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। माना जाता है कि महावीरप्रसाद द्विवेदी के काल में छायावादी प्रवृत्तियों को स्थान नहीं मिलता था लेकिन 1921 ई0 से 1925 ई0 तक सरस्वती पत्रिका के सम्पादक के रूप में पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बने, तो इनके काल में छायावादी प्रवृत्तियों की झलक दिखायी देने लगी।

साहित्यिक पत्रिका-

'सरस्वती' पत्रिका को हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिकाओं में इसलिए माना जाता है कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास करना था। इसके प्रकाशन वर्ष 1900 ई0 में प्रारम्भ से लेकर तथा 1903 ई0 से 1920 ई0 तक महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में इसने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा और ऊँचाई का स्थान प्रदान किया। इसी कारण हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस काल को द्विवेदी काल के रूप में जाना जाता है। 'सरस्वती' पत्रिका के शुरूआती दौर में द्विवेदीयुग से ही हिन्दी कहानी का आरम्भ बिन्दु माना जाता है। "यह कालखण्ड 'सरस्वती' के वैचारिकी संक्रमण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।"[5]

इस काल में 'सरस्वती' पत्रिका की केन्द्रीय विषयवस्तु के रूप में कविता, कहानी, निबन्ध, आलोचना, नाटक, जीवनी, संस्मरण और यात्रावृत्तांत जैसी साहित्यिक विधाओं का नियमित प्रकाशन होता था। इन्हीं कारणवश 'सरस्वती' पत्रिका एक साहित्यिक पत्रिका के रूप में प्रसिद्ध है।

हिन्दी भाषा का मानकीकरण-

'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का मानकीकरण इस प्रकार हुआ कि जिसके कई रूप हैं, जिसमें हिन्दी खड़ी बोली को प्रतिष्ठा मिली। इसमें ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली हिन्दी को साहित्य की प्रमुख भाषा बनाया गया, जिससे हिन्दी का एक मानक रूप विकसित हुआ। इसके साथ आचार्य

महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लेखकों को शुद्ध, सरल और व्याकरण के नियमों के अनुरूप भाषा लिखने पर बल दिया। "भाषा का आदर्शीकरण और स्थिरीकरण महावीरप्रसाद द्विवेदी ने किया।"[6] इस पत्रिका ने वर्तनी की एकरूपता, जिसमें शब्दों की सही वर्तनी, देवनागरी लिपि के शुद्ध-सरल और व्याकरण के नियमों के अनुरूप भाषा लिखने पर बल दिया। 'सरस्वती' पत्रिका विशेषकर आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में हिन्दी भाषा को शुद्ध, सरल, व्याकरण सम्मत, मानकीकृत और आधुनिक स्वरूप प्रदान करने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। "महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से जहाँ साहित्यिक पत्रिका ऊँचे मानदण्ड स्थापित किए, पत्रकारों की नई पीढ़ी के प्रेरणा-स्रोत बने वहीं गद्य और पद्य दोनों भाषाओं की वर्तनी और शैलियाँ निर्धारित कर हिन्दी को आधुनिक बनाया।"[7] हिन्दी के विकास में महावीरप्रसाद द्विवेदी सच्चे अर्थों में हिन्दी गद्य के परिष्कारक थे।

निष्कर्ष-

'सरस्वती' पत्रिका को बीसवीं शती के आरम्भिक चरण का विश्वकोश कहा जाता है। इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी कहानी को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर उसे समाज, संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का कार्य किया। 'सरस्वती' पत्रिका ने कहानी को एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से अनेक नए और प्रतिभाशाली रचनाओं को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने का अवसर मिला, जिससे हिन्दी कहानी का विषय, शिल्प और भाषा निरन्तर समृद्ध हुए। हिन्दी कहानी के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका का योगदान सदैव स्मरणीय, प्रेरणादायक और मील का पत्थर माना जाएगा।

सन्दर्भ-

1. डॉ0 विवेक शंकर, आधुनिक भाषा-विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का विकास 1900-1950, भाग-1, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली।
3. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का विकास 1900-1950, भाग-1, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली।
4. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
5. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
6. डॉ0 हरदेव बाहरी, हिन्दी उद्भव, विकास और रूप, किताब महल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
7. डॉ0 विवेक शंकर, आधुनिक भाषा-विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।